टोंक जिले की पीपलू तहसील में कृषिगत पशुपालन

भैरूलाल जाट

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य टोंक जिले की पीपलू तहसील मे कृषिगत पशुपालन की संरचना का अध्ययन करना है। टोंक जिले मे विगत दशकों के दौरान सिंचाई व्यवस्था मे विस्तार, बढ़ती जनसंख्या की दिन–प्रतिदिन बढ़ती मांगोंकी पूर्ति के लिए पशुओं की संख्या मे वृद्धि हुई है वहीं कुछ पशुओं मे कमी देखने को मिली है। गौवंश मे पिछते तीन दशकों से 9.0 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। भैंस की संख्या मे यहॉ पशुओं मे सबसे अधिक 14.0 प्रतिशत की वृद्धि अंकित हुई है तथा भेंडों की संख्या में 10.0 प्रतिशत तक की कमी हुई है एवं सुअरों की संख्या में सबसे अधिक गिरावट देखी गई है। पशु प्रजनन केन्द्र, नस्ल सुधार केन्द्र, पशु परिवर्द्धन केन्द्र एवं संक्रामक रोगों से निदान आदि के कारण यहॉ पशुओं की संख्या मे वृद्धि हुई है।

इसके साथ–साथ कुछ पशुओं मे कमी भी देखने को मिली है। इसमें बकरियॉ की संख्या में पिछले तीन दशकों मे 1 प्रतिशत की कमी आई है। ऊॅटों की संख्या मे भी कमी एवं भार ढोने वाले पशु घोड़े/खच्चर/टट्टुओं में 0.02 प्रतिशत की कमी हुई है एवं गधों में 0.02 प्रतिशत की कमी देखने को मिली है। क्षेत्र में लगातार सिंचाई व्यवस्था का विस्तार से कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई है, जिससे चारागाहों मे कमी, कृषि यंत्र एवं उपकरण, एवं कृषि तकनीकी के कारण पशुओं का स्थान आजकल कृषि उपकरणों ने ले लिया है। जिससे यह पशु खेती के लिए उपयुक्त नहीं माने जाते हैं और सघन कृषि में अब ट्रेक्टरों का उपयोग अधिक किया जाने लगा है। इसके साथ–साथ शिक्षा का प्रसार अधिक होने के कारण लोगों का ध्यान अन्य कार्यो में होने लगा है। पशुओं का विशेष रूप से उपयोग करना जीवन की गुणवत्ता तथा पर्यावरण की सुरक्षा व संरक्षण हेतु उपयोगी है तथा भविष्य मे बढ़ती जनसंख्या की जीवनशैली एवं मांगों की पूर्ति के लिए पशु संसाधन का अधिक ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

संकेतांक सिंचाई व्यवस्था, जनसंख्या, प्रजनन केन्द्र, नस्ल सुधार केन्द्र, संक्रामक रोग।

परिचयः

राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुओं का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कृषि एवं पशुपालन एक ही सिक्के के दो पहलू है। राजस्थान राज्य में पशु सम्पदा ही नहीं बल्कि संसाधन भी कहलाते है। डॉ. डार्लिग के शब्दों में, ''इसके बिना खेत बिना जुते पड़े रहते हैं, खलिहान खाद्यान्नों के अभाव में खाली पड़े रहते हैं, तथा एक शाकाहारी देश में इससे अधिक दुःखदायी बात क्या हो सकती है कि यहॉ पशुओं के अभाव में घी, दूध, मक्खन, पनीर एवं अन्य उत्पादों आदि पौष्टिक पदार्थो की प्राप्ति का ही अकाल पड़ सकता है।'' प्रदेश की जलवायु शुष्क एवं अर्द्धशुष्क तथा प्रदेश का उत्तरी व पश्चिमी भाग रेगिस्तानी, वर्षा की कमी तथा उपजाऊ मिट्टी की कमी इत्यादी है, इसलिए यहॉ की जनसंख्या की उदरपूर्ति पशुपालन पर निर्भर है। अध्ययन क्षेत्र राज्य के रेगिस्तान के शुष्क एवं अर्द्धशुष्क प्रदेश में अवस्थित है।

अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मे कृषि एवं पशुपालन दोनों का ही अधिक महत्व है, क्योंकि जिले का अधिकांश भू–भाग शुष्क एवं रेतीला है। जिले के गैर–सिंचित क्षेत्रों मे अधिकतर जनसंख्या के लिए पशुपालन प्रमुख व्यवसाय है। लघु एवं सीमान्त काश्तकार, कृषि श्रमिकों एवं अन्य ग्रामीण निर्धन लोगों की बहुत बड़ी संख्या लाभप्रद रोजगार हेतु पशुधन पर आधारित है, यह कृषि के साथ निकटता से अन्तर्गुम्फित है और क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रोजगार एवं पारिवारिक आय को स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। अध्ययन क्षेत्र के गैर–सिंचित क्षेत्रों मे देशी नस्लों का पशुपालन अधिक किया जाता है।

पशुधन संरचना :

अध्ययन क्षेत्रों मे पशुपालन प्रमुख व्यवसाय है। यहॉ की अर्थव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जिलें में 1981 मे कुल पशुधन 667031 था जो राज्य का 1.63 प्रतिशत था। कुल पशुधन मे सर्वाधिक पशु गौवंश 187090 (28.04 प्रतिशत) और सबसे कम ऊॅट 58283 (4.66 प्रतिशत) है।

सन् 1991 में अध्ययन क्षेत्र में कुल पशुधन 689364 थे, जो राज्य का 1.44 प्रतिशत था, एवं कुल पशुधनमें सर्वाधिक पशु गौवंश 184605 (26.77 प्रतिशत) और सबसे कम ऊँट 60935 (8.83 प्रतिशत) है।

जिले में 1996 में कुल पशुधन 1249120 थे जो राज्य का 2.31 प्रतिशत है। कुल पशुधन में सर्वाधिक पशु भैंस 330047 (26.42 प्रतिशत) है एवं सबसे कम पशु रेगिस्तानी जहाज ऊँट 58283 (4.66 प्रतिशत) है। 2001 में यहॉ कुल पशुधन 1244734 थे जो राज्य का 2.52 प्रतिशत है। इसमें सर्वाधिक पशु भैंस 330988 (26.59 प्रतिशत) है एवं सबसे कम ऊँट 57706 (4.63 प्रतिशत) है।

सन् 2006 में अध्ययन क्षेत्र में कुल पशुधन 1141398 है जो राज्य के 2.10 प्रतिशत है तथा यहॉ सर्वाधिक पशु गौवंश 334136 (29.27 प्रतिशत) है एवं सबसे कम ऊँट 34148 (2.99 प्रतिशत) है।

अतः अध्ययन क्षेत्र में गत तीन दशकों में सर्वाधिक पशु गौवंश है। इसका कारण यह है कि जिले मे पशु सुधार कार्यक्रम, नस्ल सुधार कार्य, संक्रामक रोगों से निदान, सिंचाई व्यवस्था से चारे, कृषि एवं यातायात कार्य में बैलों की उपयोगिता, पानी की उपलब्धता एवं क्षेत्र की पीपलू तहसील में गौवत्स (बछड़ा) परिवर्धन केन्द्र आदि हैं।

सारणी संख्या 1 : पीपलू तहसीलः पशुधन – 2003 एवं 2012

वर्ष	वर्ष 2003				वर्ष 2012			
तहसील / जिला	पीपलू	प्रतिशत में	टोंक	प्रतिशत में	पीपलू	प्रतिशत में	टोंक	प्रतिशत में
गौवंश	6077	6.27	219612	21.61	17969	15.41	227674	18.84
भैंस	22058	22.77	228914	22.52	42179	36.18	391599	32.40
ब्करी	29841	38.81	326056	32.08	33894	29.07	375827	31.10
भेड़	26296	27.15	225430	22.18	21789	18.69	200694	16.61
ऊँट	151	0.16	2176	0.21	40	0.03	789	0.07
घोड़े	109	0.11	898	0.09	155	0.13	953	0.08
गधे	37	0.04	913	0.09	10	0.01	268	0.02
सुअर	12283	12.68	12283	1.21	553	0.47	10820	0.90
योग	96852	100.00	1016282	100.00	116589	100.00	1208624	100.00

स्त्रोतः कार्यालय, जिला सांख्यिकी, टोंक 2003 एवं 2015

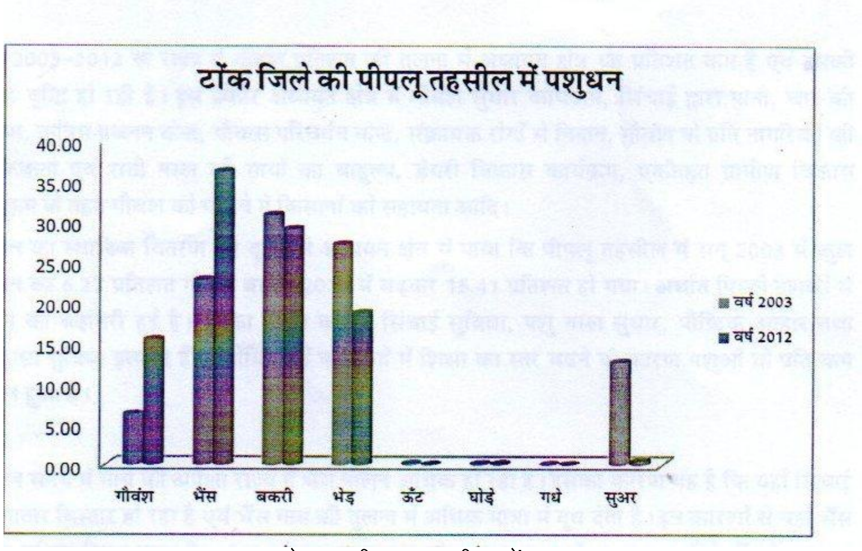

आरेख : पीपलू तहसील में पशुधन

2003–2012 तक अध्ययन क्षेत्र में ऊँटों की कुल पशुधन में सबसे कम हैं क्योंकि ऊँट कम संख्या में पाले जाते हैं एवं इसकी संख्या में निरंतर कमी आने के कारण यह है कि यहाँ सिचांई पानी के कारण गहन कृषि कार्य किया जाने लगा है जिसके कारण यहाँ यांत्रिक कृषि यंत्रों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है। इस कारण यहाँ ऊँट का महत्व केवल गैर सिंचित क्षेत्रों मे ही अधिक है। सिंचित क्षेत्र ऊँटों के विकास के लिए अनुकूल नहीं है क्योंकि अधिक आर्द्रता वाले क्षेत्रों में ऊँटों में सर्रा नामक बीमारी अधिक होती है।

पशुधन का स्थानिक क्षेत्रीय वितरणः

अध्ययन क्षेत्र में कई तरह के पशु पाए जाते हैं जो अपनी अलग–अलग विशेषताएं लिये हुए हैं। यहाँ पशुपालन का प्रमुख क्षेत्र गैर–सिंचित क्षेत्र है, क्योंकि यहाँ पशुओं के लिए उपयुक्त दशांए पाई जाती है। जिले में वर्षा की मात्रा कम होने के कारण कृषि कार्य करना मुश्किल है। यहाँ पर विस्तृत क्षेत्रों में चारागाहों का पाया जाना भी पशुओं के लिए उपयुक्त है, जिसके कारण बड़े पैमाने पर पशुचारण की सुविधा यहाँ मौजूद है। क्षेत्र के गैर–सिंचित क्षेत्रों घुमक्कड़ पशुपालन (चलवासी पशुचारण) भी काफी संख्या में मौजूद है, जो पशुओं को चराने हेतु समय एवं परिस्थिति के साथ–साथ स्थान बदलते रहते हैं। क्षेत्र के सिंचित क्षेत्रों में पशुपालन छोटे पैमाने पर किया जाता है क्योंकि यहाँ सिंचाई पानी के साथ–साथ आजीविका के अन्य सुलभ साधन (कृषि) मौजूद है।

गौवंश :

गाय दुग्ध उत्पादन करने वाले पशुओं में प्रमुख है। इसका दूध हल्का, पतला एवं पोष्टिक होता है। अतः अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक गौवंश पाले जाते हैं।

2003 की पशु जनगणना के अनुसार राज्य में 11563936 गौवंश थे जो राज्य के कुल पशुओं का 21.29 प्रतिशत तथा अध्ययन क्षेत्र में 6077 गौवंश है जो जिले के कुल पशुओं का 6.27 प्रतिशत है। इसी प्रकार वर्ष 2012 में अध्ययन क्षेत्र में गौवंश की संख्या बढ़कर 17969 हो गई जो जिले के कुल पशुधन का 15.41 प्रतिशत है।

अतः 2003–2012 के राज्य में गौवंश प्रतिशत की तुलना मे अध्ययन क्षैत्र का प्रतिशत कम है एंव इसकी निरंतर वृद्धि हो रही है। इस प्रकार अध्ययन क्षैत्र मे गौवंश सुधार कार्यक्रम,सिंचाई द्वारा पानी,चारे की सुविधा,कृत्रिम प्रजनन केन्द्र,गौवत्स परिवर्धन केन्द्र,संक्रामक रोगो से निदान,गौवंश के प्रति नागरिको की जागरूकता एंव राठी नस्ल की गायो का बाहुल्य,डेयरी विकास कार्यक्रम,एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत गौवंश पालने मे किसानो को सहायता आदि।

पशुधन का स्थानिक वितरण की दृष्टि से अध्ययन क्षैत्र मे पाया कि पीपलू तहसील मे सन् 2003 में कुल पशुधन का 6.27 प्रतिशत गौवंश था जो 2012 मे बढकर 15.41 प्रतिशत हो गया। अर्थात पिछले दशको मे गौवंशो की बढोतरी हुई है। इसका प्रमुख कारण सिंचाई सुविधा,पशु नस्ल सुधार,पौष्टिक आहार तथा चिकित्सा सुविधा इत्यादि है। क्योंकि यहाँ के लोगो मे शिक्षा का स्तर बढने के कारण पशुओ के प्रति कम रूझान हुआ है।

भैंस :

वर्तमान समय मे गाय की अपेक्षा राज्य मे भैंस पालन अधिक हो रहा है। इसका कारण यह है कि यहा सिंचाई मे लगातार विस्तार हो रहा है एंव भैंस गाय की तुलना मे अधिक दूध देती है। इन कारणो से यहा भैंसो का पालन अधिक किया जाता है। 2003 की पशु जनगणना के अनुसार राज्य में 6339749 भैंसे थी जो राज्य के कुल पशुधन का 15.52 प्रतिशत था एंव अध्ययन क्षैत्र मे पशुगणना के अनुसार 22058 भैंसे थी जो कुल पशुओं का 22.77 प्रतिशत है।

सन् 2012 की गणना के अनुसार राज्य मे 12037159 भैंसे थी जो राज्य के कुल पशुओ का मात्र 22.16 प्रतिशत है। तथा टोंक जिले मे 2012 को 391599 भैंसे थी जो जिले के कुल पशुओ का 32.40 प्रतिशत है। इस प्रकार 2003–2012 तक राज्य से,जिले मे कुल पशुधन का प्रतिशत अधिक तथा इसके लगातार वृद्धि का भी संकेत है इसके मुख्य कारण यह है कि क्षैत्र मे निरंतर सिंचाई विस्तार के कारण चारे एंव पानी की अच्छी सुविधा,नम वायु,मुर्रा भैंस(नस्ल) डेयरी विकास कार्यक्रम,ढांचागत सुविधा,प्शु परिवर्धन केन्द्र,न्सल सुधार कार्यक्रम,चिकित्सा का विस्तार,दुग्ध प्रशीतन केन्द्र,भैंस द्वारा अधिक मात्रा मे दूध मे देना,ण्व जनसंख्या संसाधन द्वारा अधिक मांग आदि।

जिले की पीपलू मे सन् 2003 मे 22.77 प्रतिशत भैंस थी जो 2012 मे वृद्धि के साथ 36.18 प्रतिशत हो गया। अतः अध्ययन क्षेत्र में भैंस की संख्या मे वृद्धि अंकित की जा रही है। जिसका मुख्य कारण सिंचाई का विस्तार,नस्ल सुधार कार्यक्रम,संकर नस्लो का प्रयोग,डेयरी विकास,रोजगार मे सहायक इत्यादि है।

बकरियां :

राज्य की शुष्क एंव अर्द्धशुष्क जलवायु मे बकरियो का अधिक महत्व है। एक तो यहॉ कि जलवायु बकरियो के अनुकुल है एंव दुसरी ओर राज्य की अधिकांशजनसंख्या गरीब एंव पिछडी हुई है, इसलिए ग्रामीण क्षैत्रो में बकरियो का अधिक पाला जाता है। अतः इसे गरीब की गाय कहा जाता है।

2003 की जनसंख्या के अनुसार राजस्थान मे 17741917 बकरियाााां थी,जो कुल पशुधन का 32.66 प्रतिशत था,तथा अध्ययन क्षैत्र मे 2003 को 29841 बकरियां थी, जो कुल पशुधन का 30.41 प्रतिशत थी। इसी प्रकार वर्ष 2012 मे टोंक जिले मे पशुधन का 31.10 प्रतिशत बकरी पशुधन था और अध्ययन क्षैत्र पीपलू तहसील में यह वर्ष 2003 की तुलना में 29.07 प्रतिशत ही रह गया। इस प्रकार अध्ययन क्षैत्र मे 2003 से 2012 तक राज्य की तुलना मे बकरियो की संख्या एंव प्रतिशत मे कमी आई है एंव यहॉ राज्य के प्रतिशत से भी कम है। इसका कारण यह है कि लगातार सिंचाई विस्तार के कारण चारागाह का कृषि भूमि मे परिवर्तन है। जैव विविधता मे कमी के कारण यहां झाडी,पेडपौधों एंव वनस्पतियो मे कमी आई है जिससे बकरियो के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पडा है। शिक्षा का स्तर बढने के कारण यहां की जनता का रूझान प्राथमिक कार्यो से द्वितीयक कार्यो एंव अन्य कार्यो की ओद बढा है। परिणामस्वरूप बकरियो की संख्या मे कमी आ रही है।

भेड :

राजस्थान की शुष्क एंव अर्द्धशुष्क जलवायु मे भेडपालन प्रमुख व्यवसाय है। राज्य मे प्रतिवर्ष भेडो से 20 करोड रूपयो की आय होती है। यह यहां कठोर र्प्यावरणीय परिस्थितियसो को आसानी से सहन कर सकती है। क्योंकि ये यहां की जलवायु व आर्थिक दशाओं के अधिक अनुकुल मानी जाती है। राज्य की बहुआयामी अर्थव्यवस्था में इसका स्थान महत्वपूर्ण है।

पशुगणना 2003 के अनुसार राजस्थान 9913408 भेडे थी जो राज्य के कुल पशुधन का 24.28 प्रतिशत था,एंव टोंक जिले मे भी 2003 की गणना के अनुसार 225430 भेडे थी जो कुल पशुधन का 22.18 प्रतिशत है एंव अध्ययन क्षैत्र पीपलू तहसील मे इनकी संख्या 26296 थी जो अध्ययन क्षैत्र के कुल पशुधन का 27.15 प्रतिशत है।

सन् 2013 में जिले में 200694 भेडे थी जो कुल पशुधन का 16.61 प्रतिशत तथा अध्ययन क्षैत्र मे 2013 को 21789 भेडे थी जो पशुधन का 18.69 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि 1981 स 1991 तक के दशक में राज्य की तलना मे अध्ययन क्षैत्र मे इसके प्रतिशत मे निरंतर कमी आ रही है। इसका कारण यह है कि जिले मे चारागाहो की कमी एंव संक्रामक रोगों का प्रकोप,भेड नस्ल सुधार कार्यक्रम मे कमी एंव शिक्षा का प्रसार,डेयरी विकास कार्यक्रम इत्यादि है।

अतः अध्ययन क्षैत्र मे पिछले दशको की तुलना मे इस दशक मे भेडो की संख्या मे कमी अंकित की गई है। इसका कारण जिले मे नाली नस्ल भेड,भेड अनुसंधान केन्द्र की स्थापना,रोग निवारण केन्द्र,कृत्रिम प्रजनन केन्द्र,जनजागरूकता एंव नस्ल सुधार कार्यक्रम आदि का अभाव होना है।

इनकी संख्या मे वृद्धि करने हेतुतहसील स्तर पर नहर से पर्याप्त पानी एंव चारा,सहकारी ऋण योजना,पशु बीमा याजना,चिकित्सा सुविधा एंव जनजागरूकता आदि है।

ऊॅटो :

देश के कुलऊॅटों का 65 प्रतिशत राज्य मे पाले जाते है। ऊॅट शुष्क जलवायु मे रहने वाला पशु है,इसका यहां परिवहन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। यह रेतीली मिट्टी मे अपने गद्दीदाद पैरो से आसानी स`चल सकता है तथा बिना पानी पिये काफी दिनो तक रह सकता है। राज्य के यह मरूस्थलीय क्षैत्रो मे यह अधिक पाया जाता है। बीकानेर मे ऊॅट अनुसंधान केन्द्र एंव ''गंगा रिसाला'' राज्य की शान है। ऊॅटो को अपनी शारीरिक विशिष्टताओ के कारण रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है।

सन् 2003 की जनगणना के अनुसार प्रदेश मे 498024 ऊँट थे,जो कुल पशुधन का मात्र 1.00 प्रतिशत है एंव जिले मे 2003 मे 2176 ऊँट थे जो कुल पशुधन का 0.21 प्रतिशत था एंव तहसील मे मात्र 151ऊँट थे जो अध्ययन क्षैत्र में कुल पशुधन का केवल 1.16 प्रतिशत था।

2012 में राज्य मे 536927 ऊँट थे कुल पशु धन का 0.98 प्रतिशत है एंव अध्ययन क्षैत्र मे 2012 की 40 ऊँट थे जो कुल पशुधन का 0.03 प्रतिशत है। अतः अध्ययन क्षैत्र मे 2003 से 2013 तक के आंकडो के अनुसार राज्य के ऊँटो के प्रतिशत से कम है। इसका प्रमुख कारण जिले का अधिकांश भाग सिंचित होना है। जिले मे 2003–2012 तक ऊँटो के प्रतिशत मे लगातार कमी होने के निम्न कारण है – यहाँ की गैर सिंचित भूमि को सिंचित मे परिवर्तन करने के कारण,गहन कृषि प्रणाली,आधुनिक कृषि यंत्रो का प्रचलन एंव आधुनिक कृषि प्रणाली तथा क्षैत्र मे नमी की मात्रा में अधिकता,इत्यादि।

घोडे/खच्चर/टट्टू :

राज्य मे घोडे/खच्चर/टट्टू का महत्व कम है क्योंकि इसका प्रयोग शहरो/कस्बो मे बोझा ढोने के लिए करते है। कृषि कार्यो मे इनका महत्व कम है। इस कारण राजस्थान कृषि प्रदान राज्य होने के कारण यहाँ इसका महत्व कम है हालांकि प्रदेश के कुछ भागो मे भी कृषि इसके माध्यम से करते है लेकिन यह बहुत ही कम है।

सन् 2003 मे प्रदेश में घोडे/खच्चर/टट्टू थे जो कुल पशुधन का 0.05 प्रतिशत तथा जिले मे 2003 को 898 घोडे/खच्चर/टट्टू थे जो कुल पशुधन का 0.09 प्रतिशत है एंव पीपलू में इनकी संख्या 109 थी जो कुल पशुधन का 0.11 प्रतिशत था।

2012 की गणना के अनुसार राज्य मे 24769 घोडे/खच्चर/टट्टू थे जो पशुधन का मात्र 0.04 प्रतिशत ण्वं अध्ययन क्षैत्र मे 2012 को 155 घोडे/खच्चर/टट्टू हैं जो कुल पशुधन का 0.13 प्रतिशत है। अतः अध्ययन क्षैत्र की पद्धतिमे इसका प्रयोग न होने के बावजूद भी यहाँ 2003–2012 तक राज्य की तुलना इसका प्रतिशत अधिक है। इसका कारण यहाँ कि कृषि मंडियो मे भार ढोने के काम आता है,उद्योगो द्वारा उत्पादित माल को शहर के अन्य क्षै.ो मे इसके द्वारा ही ढोया जाता है शहर के मुस्लिम लोगो के पास इसकी संख्या अधिक है।

गधे :राज्य मे गधा भार ढोने के काम आता है। जो अधिकतर शहर/कस्बो मे पाया जाता है। यह कृषि कार्यो मे भी काम आता है। लेकिन नगण्य रूप मे अन्य पशुओं की तुलना मे कम पायी जाती है।

2002 की पशु गणना के अनुसार प्रदेश में 142578 गधे थे, जो कुल पशुधन का 0.28 प्रतिशत था। अध्ययन क्षेत्र पीपलू तहसील में वर्ष 2003 में 37 गधे थे जो कुल पशुओं का 0.04 प्रतिशत है।

पशुगणना 2012 के अनुसार राज्य में 158791 गधे थे जो कुल पशुधन का 0.29 प्रतिशत है जबकि अध्ययन क्षेत्र में 2012 मे 10 गधे थे, जो क्षेत्र के कुल पशुधन का 0.01 प्रतिशत है। अतः यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में गधों का प्रतिशत 2003 से 2012 तक राज्य के प्रतिशत से कम है और यह पहले की तुलना में और कम हो रहा है। इसका कारण यह है कि अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान होने के कारण कृषि कार्यों में इसका महत्व बहुत ही कम होता है जो केवल शहरों तक ही सीमित है, शहरों में यह भार ढोने का काम करते है। कृषि यंत्र एवं मशीनीकरण के कारण इसका महत्व कम हो गया है।

अतः अध्ययन क्षेत्र में पिछले दशकों की तुलना में अब गधों की संख्या में कुछ वृद्धि अंकित की गई है जिसका मुख्य कारण ये कृषि उपज मण्डियों में भार ढोने एवं शहर में बोझा ढोने के काम आते हैं। जिसके कारण इसकी सार–संभाल रखी जाती है।

सूअर :

सूअर एक गंदा पशु है जो शहरों की गंदी नालियों में पलकर बड़ा होता है एवं सड़ी–गली एवं गंदी वस्तुओं को खाता है। हमारे राज्य में कुल पशुओं की तुलना में सुअरों का प्रतिशत कम है।

सन् 2002 की पशु गणना के अनुसार प्रदेश में 337762 सुअर थे जो कुल पशुधन का 0.68 प्रतिशत थे तथा अध्ययन क्षेत्र में सन् 2003 को 12283 सुअर थे जो कुल पशुधन का 12.68 प्रतिशत था।

2012 में राज्य में कुल 356951 सुअर थे जो कुल पशुधन का 0.65 प्रतिशत है जबकि अध्ययन क्षेत्र में 2012 को 553 सुअर थे जो क्षेत्र के कुल पशुधन का 0.47 प्रतिशत है। अतः अध्ययन क्षेत्र में राज्य की तुलना में सुअरों का प्रतिशत कम है, एवं इनकी संख्या 2003–2012 के अन्तराल में अप्रत्याशित गिरावट आई है। जिसका कारण सुअरों का मांस प्राप्त करना है, यह नगदी व्यापार जानवर है। इसको पंजाब, दिल्ली आदि केन्द्रो मे निर्यात किया जाता है। अतः यहॉ व्यापारिक पालन होता है, इसकी देखभाल चिकित्सा आदि का ध्यान रखा जाता है।

शोधार्थी, भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर